

पूर्ण सुसमाचार और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा: एक व्याख्यात्मक सारांश

1. प्रस्तावना: सुसमाचार का एक अनिवार्य अंग

मसीही जीवन और पवित्र शास्त्र की शिक्षाओं का अध्ययन करने वाले नए शिक्षार्थियों के लिए यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा कोई ऐच्छिक या वैकल्पिक अनुभव नहीं है, बल्कि यह **राज्य के पूर्ण सुसमाचार का एक अनिवार्य और मूल अंग** है। प्रभु यीशु मसीह द्वारा अपनी पृथ्वी पर की सेवाई आरंभ करने से पूर्व ही, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने पवित्र आत्मा के इस विशिष्ट बपतिस्मा की घोषणा स्पष्ट शब्दों में कर दी थी:

"मैं ने तो तुम्हें जल से बपतिस्मा दिया है पर वह तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा देगा।" — **मरकुस 1:8**

मसीही शिक्षण में अक्सर यह भ्रम पैदा होता है कि जब कोई व्यक्ति मन फिराकर उद्धार प्राप्त करता है, तो उसे पवित्र आत्मा का पूर्ण संचार स्वतः ही प्राप्त हो जाता है और इसके लिए किसी पृथक अनुभव की आवश्यकता नहीं है। परंतु पवित्र शास्त्र बाइबल का गहन अध्ययन यह सिद्ध करता है कि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा धर्म-परिवर्तन का स्वाभाविक परिणाम मात्र नहीं है, अर्थात् यह आरंभिक **"उद्धार पैकेज का हिस्सा नहीं है"**। यह उद्धार के पश्चात प्राप्त होने वाला एक अलग और अलौकिक अनुभव है।

यह सत्य नए शिक्षार्थियों के समक्ष एक विचारणीय प्रश्न प्रस्तुत करता है: *यदि पवित्र आत्मा का बपतिस्मा उद्धार के अनुभव से पृथक है, तो पवित्र शास्त्र इस अंतर को किस प्रकार प्रमाणित करता है और मसीही सिद्धान्तों में इसका क्या स्थान है?*

2. उद्धार और पवित्र आत्मा के बपतिस्मा में अंतर (Scriptural Distinction)

इब्रानियों की पत्री में मसीह की शिक्षा की आरंभिक और बुनियादी बातों का वर्णन करते हुए पवित्र शास्त्र स्पष्ट करता है कि विश्वासी के लिए एक से अधिक बपतिस्मा उपलब्ध हैं। यहाँ "बपतिस्मों" (बहुवचन) और "हाथ रखने" को मसीही धर्म-सिद्धान्तों की प्राथमिक नींव माना गया है:

"इसलिए आओ मसीह की शिक्षा की आरम्भ की बातों को छोड़कर हम सिद्धता की ओर आगे बढ़ते जाएँ, और मरे हुए कामों से मन फिराने, और परमेश्वर पर विश्वास करने, और **बपतिस्मों और हाथ रखने**, और मरे हुए के जी उठने, और अन्तिम न्याय की शिक्षा रूपी नींव फिर से न डालें।" — **इब्रानियों 6:1-2**

पवित्र शास्त्र के प्रेरितों के काम पुस्तक से दो प्रमुख ऐतिहासिक घटनाएँ उद्धार (मन फिराव व जल के बपतिस्मा) तथा पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के मध्य स्पष्ट अंतर को प्रमाणित करती हैं:

- **सामरिया का उदाहरण (प्रेरितों के काम 8:12, 14-17):** सामरिया के लोगों ने फिलिप्पुस द्वारा सुनाए गए सुसमाचार पर विश्वास किया और पुरुषों व स्त्रियों ने जल का बपतिस्मा लिया। परंतु पवित्र आत्मा उनमें से किसी पर नहीं उतरा था; उन्होंने केवल प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा लिया था। जब यरूशलेम

से प्रेरित पतरस और यूहन्ना ने वहाँ पहुँचकर उनके लिए प्रार्थना की और उन पर हाथ रखे, तब उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया। यह स्पष्ट करता है कि धर्म-परिवर्तन और जल के बपतिस्मा के बाद भी पवित्र आत्मा का बपतिस्मा एक अलग अनुभव के रूप में प्राप्त हुआ।

- **इफिसुस का उदाहरण (प्रेरितों के काम 19:1–7):** जब पौलुस ऊपर के सारे प्रदेशों से होकर इफिसुस पहुँचा, तो उसे वहाँ कुछ चेले मिले। पौलुस ने उनसे पूछा, *"क्या तुम ने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया?"* उन्होंने उत्तर दिया कि उन्होंने पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी है। वे केवल यूहन्ना के मन फिराव के बपतिस्मा को जानते थे। जब पौलुस ने उन्हें प्रभु यीशु के नाम में बपतिस्मा दिया और उन पर हाथ रखे, तब पवित्र आत्मा उन पर उतरा और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे। ये सब लगभग बारह पुरुष थे।

इन दोनों आत्मिक अनुभवों के मूलभूत अंतर का तुलनात्मक विश्लेषण:

विषय / पहलू	उद्धार / जल का बपतिस्मा	पवित्र आत्मा का बपतिस्मा
मूल प्रकृति	मरे हुए कामों से मन फिराव और यीशु मसीह पर विश्वास।	सेवकाई एवं आत्मिक जीवन हेतु स्वर्ग से अलौकिक सामर्थ्य की प्राप्ति।
प्रक्रिया / माध्यम	जल में बपतिस्मा (मन फिराव और प्रभु यीशु के नाम में)।	प्रार्थना एवं अंगुओं द्वारा हाथ रखे जाने के माध्यम से पवित्र आत्मा का उतरना।
सामरिया का साक्ष्य (प्रेरितों 8)	फिलिप्पुस के प्रचार पर विश्वास कर पुरुषों व स्त्रियों का जल में बपतिस्मा लेना (पद 12)।	पतरस और यूहन्ना द्वारा हाथ रखकर प्रार्थना करने पर पवित्र आत्मा पाना (पद 17)।
इफिसुस का साक्ष्य (प्रेरितों 19)	यूहन्ना के बपतिस्मा के बाद प्रभु यीशु के नाम में पुनः बपतिस्मा लेना (पद 3–5)।	पौलुस द्वारा हाथ रखने पर पवित्र आत्मा का उतरना, भाषा बोलना व भविष्यवाणी करना (पद 6)।

उद्धार और पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के इस स्पष्ट अंतर को स्थापित करने के पश्चात, आइए यह देखें कि इस अलौकिक शक्ति को प्राप्त करने के संबंध में प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को क्या विशिष्ट निर्देश दिए थे।

3. पिता की प्रतिज्ञा और यरूशलेम में प्रतीक्षा (Acts 1:8 और Luke 24:49 का विश्लेषण)

प्रभु यीशु मसीह ने अपने शिष्यों के साथ पृथ्वी पर तीन वर्षों का समय बिताया था और उन्हें संपूर्ण बौद्धिक व धर्मशास्त्रीय शिक्षा दी थी। इसके बावजूद, स्वर्गारोहण से पूर्व यीशु ने उन्हें तुरंत जाकर प्रचार करने के बजाय यरूशलेम नगर में ठहरे रहने का स्पष्ट आदेश दिया। यीशु जानते थे कि केवल बौद्धिक ज्ञान या मानवीय बल के

आधार पर की गई सेवकाई प्रभावहीन और शक्तिहीन होती है; सुसमाचार के प्रसार के लिए अलौकिक सामर्थ्य का होना अनिवार्य है।

"और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।" — **लूका 24:49**

"क्योंकि यूहन्ना ने तो पानी में बपतिस्मा दिया है परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।" — **प्रेरितों के काम 1:5**

"परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे।" — **प्रेरितों के काम 1:8**

यीशु द्वारा अपने शिष्यों को यरूशलेम में प्रतीक्षा करने के निर्देश के पीछे निहित मुख्य कारण:

- **अलौकिक सामर्थ्य की अनिवार्यता:** केवल मानवीय ज्ञान और तर्क के बल पर की जाने वाली सेवकाई में आत्मिक परिवर्तन लाने की शक्ति नहीं होती। परमेश्वर के राज्य के काम को पूरा करने के लिए स्वर्ग से प्राप्त होने वाली अलौकिक सामर्थ्य ही एकमात्र साधन है।
- **पिता की प्रतिज्ञा की पूर्ति:** पेंटेकोस्ट के दिन जब सब चेले एक जगह इकट्ठे थे, तब पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के द्वारा पिता परमेश्वर की वह प्राचीन प्रतिज्ञा पूरी हुई, जिसकी घोषणा यीशु ने की थी।
- **भौगोलिक विस्तार हेतु सशक्तिकरण:** यरूशलेम से लेकर यहूदिया, सामरिया और पृथ्वी की अंतिम छोर तक सुसमाचार की सामर्थी गवाही देने के लिए शिष्यों का पवित्र आत्मा से सुसज्जित होना आवश्यक था।

यह अलौकिक बपतिस्मा किस प्रकार विश्वासी के व्यक्तिगत जीवन और उसकी गवाही देने की क्षमता को व्यावहारिक रूप से बदल देता है, इसका विश्लेषण अगले अनुभाग में किया गया है।

4. गवाही में परिवर्तन: मानवीय शब्दों से जीवित सामर्थ्य तक

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा विश्वासी के जीवन में गवाही देने के स्वरूप को पूरी तरह बदल देता है। बपतिस्मा के बिना और बपतिस्मा के बाद की सेवकाई के अंतर को निम्नलिखित दो बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

1. केवल मानव ज्ञान पर आधारित गवाही (बपतिस्मा के बिना):

- जो विश्वासी या सेवक पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त किए बिना सेवकाई करते हैं, उनकी गवाही और सेवकाई **शक्तिहीन** बनी रहती है।
- वे केवल मनुष्यों को मनाने वाले बौद्धिक तर्कों और ज्ञानवर्धक शब्दों के माध्यम से लोगों को मसीह की ओर लाने का प्रयास करते हैं, परंतु उसमें जीवन को अंदर से बदलने वाली अलौकिक सामर्थ्य का अभाव होता है।

2. पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से युक्त गवाही (बपतिस्मा के बाद):

- पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने के पश्चात विश्वासी परमेश्वर की **जीवंत सामर्थ्य से परिपूर्ण** हो जाते हैं।
- वे मात्र बातें करने वाले या उपदेश देने वाले प्रचारक नहीं रहते, बल्कि **जीवित गवाह (Living Witness)** बन जाते हैं। उनका संपूर्ण जीवन, आचरण और सेवकाई स्वयं प्रभु यीशु मसीह के जीवित सत्य और उपस्थिति की प्रत्यक्ष गवाही देती है।

यदि आपने यीशु मसीह पर विश्वास करने के पश्चात भी अब तक यह अलौकिक बपतिस्मा प्राप्त नहीं किया है, तो पवित्र शास्त्र इसके लिए एक अत्यंत स्पष्ट और व्यावहारिक मार्ग निर्देशित करता है।

5. निष्कर्ष एवं व्यावहारिक मार्गदर्शन (Practical Application)

पवित्र आत्मा का बपतिस्मा परमेश्वर द्वारा अपने प्रत्येक विश्वासी को दिया जाने वाला वह अनिवार्य वरदान है, जो उसे एक सच्चे मसीही शिष्य का जीवन जीने और सुसमाचार की सामर्थ्य को प्रकट करने के योग्य बनाता है। यदि आप इस अनुभव को प्राप्त करना चाहते हैं, तो निम्नलिखित व्यावहारिक चरणों का अनुसरण करें:

1. **सत्य में विश्वास करने वाली कलीसिया की खोज करें:** एक ऐसी मसीही कलीसिया का चयन करें जो पवित्र आत्मा के बपतिस्मा के सिद्धांत और इसके व्यावहारिक अनुभव में पूर्ण विश्वास रखती हो।
2. **अगुओं से प्रार्थना हेतु निवेदन करें:** उस कलीसिया के आत्मिक अगुओं (प्राचीनों/शिक्षकों) के पास जाएँ और उनसे अनुरोध करें कि वे आप पर हाथ रखें और पवित्र आत्मा का बपतिस्मा प्राप्त करने के लिए आपके लिए प्रार्थना करें (जैसा कि सामरिया में पतरस और यूहन्ना ने तथा इफिसुस में पौलुस ने किया था)।
3. **विश्वास से सामर्थ्य को ग्रहण करें:** प्रार्थना के दौरान विश्वास के साथ पवित्र आत्मा के बपतिस्मा को स्वीकार करें, ताकि आपको प्रभु यीशु मसीह का एक सामर्थी और प्रभावशाली जीवित गवाह बनने की शक्ति प्राप्त हो सके।

मुख्य निष्कर्ष: पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल एक धार्मिक अनुष्ठान या औपचारिकता नहीं है, बल्कि यह परमेश्वर द्वारा अपने बच्चों को प्रदान की जाने वाली वह अलौकिक शक्ति है जो मसीही जीवन को आत्मिक शक्तिहीनता से निकालकर प्रभु यीशु मसीह की एक जीवित, प्रभावशाली और सामर्थी गवाही में परिवर्तित कर देती है।